झारखंड का हिंदी–खोरठा पाक्षिक पत्र

आपन माटी आपन देश

# झार न्यूज

राँची, शुक्रवार
01 से 16 दिसंबर 2022
पेज : 03, मूल्य : निःशुल्क
वर्ष : 01, अंक : 10
झारखंड संस्करण
UDYAM-JH-19–0000800

khorthajharnews@gmail.com

डिजिटल संस्करण

# 13 दिसंबर की काली रात में दर्ज छपरा के इतिहास का काला अध्याय

प्रणय प्रबोध, संपादक

*जन घर में जो जन्म लिया,*
*तो जग के लिए कुछ कर जाओ।*
*मौत तो आनी है सबको एक दिन,*
*थोड़ा धरती पर नाम बना जाओ।।*

इतिहास के पन्ने रंग–बिरंगे जरूर हो सकते हैं. लेकिन उसमें सिमटी सच्चाई अक्सर आंखों से पानी निकाल देती है. सफेद पन्नों में काली स्याही से लिखी जीवन की जीवंत सच्चाई अगर कुछ बयां करती है, तो वो है चीख, पुकार और दर्द. 13 दिसंबर 2022 की काली रात भी कुछ ऐसा ही हुआ. छपरा जिले के सारण के डोइएला, मशरख और इसुआपुर के लोगों ने जमकर जहरीली शराब का सेवन किया. लेकिन उन्हें कहां पता था कि वह शराब नहीं, जहर है. जो सिर्फ उनके जीवन का नाश नहीं करेगा, बल्कि पूरे परिवार को तबाह कर देगा. कुछ ऐसा ही हुई 14 दिसंबर 2022 को. जब घर–घर से रोगी निकलने लगे. सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सक ने जवाब दे दिया और छपरा सदर अस्पताल में इन मरीजों ने अंतिम सांसें ली.

**झारखंड का मातृ राज्य बिहार**

झारखंड का मातृ राज्य बिहार को माना जाता है. क्योंकि 15 नवंबर 2000 को बिहार से अलग होकर झारखंड का निर्माण हुआ था. सुशासन बाबू के नाम से प्रसिद्ध बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 05 अप्रैल 2016 से संपूर्ण बिहार में शराबबंदी कानून लागू किया है. लेकिन बिहार में यह कानून कहां तक कारगर साबित हुआ. इसके आकलन की जरूरत है. शराब पीना महज एक शौक नहीं, बल्कि एक बुरी आदत है. लेकिन विषपान करने वालों को क्या पता कि भला यह कभी भी किसी की भी जान ले सकता है? ऐसे ही कई मामले बिहार के अलग–अलग जिलों से उस समय सामने आए हैं. जब पूरे बिहार में शराबबंदी कानून लागू है. हम आपको पूरी कहानी बताएंगे. लेकिन लेटेस्ट अपडेट के साथ...

**14 दिसंबर 2022**

यह वही दिन है. जिस दिन बिहार के छपरा के सारण में लोगों ने खुली आंखों से मौत का तांड़व देखा. कुछ ने मां की गोद में अंतिम सांसे ली. तो किसी ने तड़पते हुए

**शराब पर सवाल ?**
**सदन में बवाल...**

1. 5 नवंबर 2021, मुजफ्फरपुर के बेटिया में 8 और गोपालगंज में 16 की मौत ।
2. 21 मार्च 2022, भागलपुर में 22, बांका में 12 और मधेपुरा में 3 की मौत ।
3. 5 अगस्त 2022, सारण में 9 की मौत, 17 लोगों के आंखों की रौशनी छीन गयी ।
4. 18 सितंबर 2022, खगड़िया के अलौली थाना क्षेत्र के अंबा गांव में 2 की मौत ।

अस्पताल के बेड पर जान दे दी. किसी को दस्त–उल्टी की शिकायत, तो किसी की नजरें छीन गयी. छपरा सदर अस्पताल उस वक्त छावनी के रूप में तब्दील हो गया. जब एक–एक कर जहरीली शराब का सेवन करने वाले मरीजों का शरीर स्ट्रेचर के जरिए बेड तक पहुंचने लगा. परिजनों के आंखों में दर्द के आंसू साफ नजर आ रहे थे और कुछ दिखाई दे रहा था, तो बस आस, आस और आस. जब किसी एक की सांस साथ छोड़ देती, तो अन्य रोगी के परिजन का दिल सहम उठता और फिर अस्पताल में नजर आता, तो केवल चीख–पुकार. ऐसे करते–करते कुल 50 से अधिक लोगों की जानें चली जाती है. रह जाती हैं, तो सिर्फ यादें.

मामला बिहार के भोजपुर के छपरा जिले के सारण का है. जहां मशरख और इसुआपुर इलाके में 13 दिसंबर की रात भारी मात्रा में देसी शराब की खेप पहुंची थी. जिसे ग्रामीणों ने 20–20 रूपए प्रति पाउच खरीदा था. एक किलोमीटर के दायरे में आने वाले करीब 50 से अधिक लोगों ने इस शराब का देर रात सेवन किया. जिसके बाद घर पहुंचने पर किसी को दस्त, किसी को उल्टी, तो किसी को अंधेपन की समस्या हुई. धीरे–धीरे कई लोगों को ऐसी शिकायतें हुई. परिजनों ने आनन–फानन में मरीजों को मशरख सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में भर्ती कराया. लेकिन स्थिति नियंत्रित न होता देख चिकित्सक ने सदर अस्पताल रेफर कर दिया. जिसके बाद सदर अस्पताल में मरीजों की भीड़ बढ़ने लगी और एक–एक कर कुल 50 से अधिक सांसें महज 24 घंटे के अंदर छीन गयी. खबर लिखे जाने तक ये आंकड़ें सामने आए हैं. हालांकि आंकड़े बढ़ने की आशंका बतायी जा रही है.

**इनकी हुई मौत**

विचेन्द्र राय, हरेंद्र राम, रामजी साह, अमित रंजन, संजय सिंह, कुणाल सिंह, मुकेश सिंह, मंगल राय, अजय गिरी, भरत राम, मनोज राम, मंगल राय, नासिर हुसैन, रमेश राम, चंद्रमा राम, विक्की महतो, गोविंद राय, ललन राम, प्रेमचंद साह, दिनेश ठाकुर, सीताराम राय, विश्वकर्मा पटेल और जय प्रकाश सिंह, सहित अन्य के नाम सामने आ रहे हैं. ये तमाम लोग डोइएला, मशरख और इसुआपुर के निवासी बताए जा रहे हैं.

**शीतकालीन सत्र में बवाल**

इन दिनों बिहार में विधानसभा का शीतकालीन सत्र चल रहा है. जहरीली शराब से हुई मौत के मुद्दे को लेकर विपक्ष ने सरकार को सदन के बाहर ही नहीं, बल्कि सदन के अंदर भी पक्ष को घेरा. विपक्ष के हंगामे से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार घबराए नजर आए. हालांकि उन्होंने स्पष्ट कहा कि बिहार में पूर्ण शराबबंदी इसलिए की गयी है, ताकि लोग शराब का सेवन न करें. लेकिन इसके वाबजूद कोई शराब का सेवन कर रहा है. तो इसमें सरकार को दोषी ठहराना कहां तक उचित है?

**कार्रवाई**

जिला प्रशासन और पुलिस पदाधिकारी घटना के संबंध में बोलने से बचते नजर आए. लेकिन घटना के बाद जिला प्रशासन में हड़कंप मच गया. जिला प्रशासन पूरी तरह सजग नजर आया. एक ओर मरीजों को समुचित चिकित्सा व्यवस्था मुहैया कराया जाने लगा. तो दूसरी ओर शराब बनाने वाले और उसकी तस्करी करने वालों पर नकेल कसना शुरू किया गया. पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए कई आरोपियों को गिरफ्तार किया है. जिनसे पूछताछ की जा रही है.

**गौर करने वाली बात**

सरकार का काम नीति का निर्धारण और कानून का निर्माण करने के साथ उसका अनुपालन सुनिश्चित कराना है. लेकिन यह तभी संभव हो सकता है, जब प्रशासनिक महकमा उनका सहयोग करे. विदेशी शराब की बिक्री पर पाबंदी तो समझ में आती है. लेकिन देसी शराब पर लगाम लगाना इसलिए मुश्किल हो जाता है, क्योंकि इसे ग्रामीण गुपचुप तरीके से अपने घरों में या जंगलों में तैयार करते हैं. जिसमें कुछ तत्व ऐसे होते हैं. जिनकी अधिकता के कारण देसी शराब जहर का रूप धारण कर लेता है. जिन्हें इस शराब की आदत लग गयी, वो इसका सेवन किए बिना नहीं रह सकते. जिसके कारण ऐसी घटनाएं घटती हैं.

**बिहार में पहले भी हो चुकी हैं जहरीली शराब से मौत**

शराबबंदी कानून लागू होने के बाद बिहार के कई जिलों में लोगों की मौत जहरीली शराब के सेवन से हुआ है. 5 नवंबर 2021 को मुजफ्फरपुर के बेटिया में 8 और गोपालगंज में 16 लोगों की मौत हुई थी. 21 मार्च 2022 को बिहार के भागलपुर में 22 लोगों की मौत हुई थी, वहीं बांका जिले में 12 और मधेपुरा में 3 लोगों की मौत हुई थी. इस घटना में कुल 37 लोगों की मौत हुई थी. 5 अगस्त 2022 को सारण जिले में जहरीली शराब के सेवन से 9 लोगों की मौत हो गयी थी, वहीं 17 लोगों के आंखों की रोशनी चली गयी थी.

**झारखंड में भी हो चुकी हैं मौत**

छब्ठ के रिकॉर्ड के मुताबिक झारखंड राज्य में भी बीते पांच सालों में 427 लोगों की मौत जहरीली शराब पीने से हुई है. वर्ष 2016 में 41, 2017 में 76, 2018 में 56, 2019 में 115 और 2020 में 139 लोगों की मौत का कारण जहरीली शराब है. फरवरी 2020 में गिरिडीह जिले के दवरी और सरिया थाना क्षेत्र में जहरीली शराब पीने से 11 लोगों की मौत हो गयी थी. वर्ष 2018 में रांची के गोंदा थाना क्षेत्र और वर्ष 2017 में डोरंडा थाना क्षेत्र में जहरीली शराब पीने से कई लोगों की मौत हो गयी थी. इसके पहले भी गिरिडीह जिले के शीतलपुर में जहरीली शराब पीने से कई लोगों की मौत हो गयी थी.

**नशामुक्त भारत की मांग**

भारतवर्ष में सदियों से महिलाओं की मांग रही है कि उन्हें नशामुक्त भारत मिले. इसके लिए हर रोज महिला संगठनों की ओर से रैलियां निकाली जाती हैं, कार्यक्रम चलाए जाते हैं. इतना ही नहीं सरकार की ओर से नशामुक्ति केन्द्रों का भी संचालन किया जा रहा है. लेकिन जब राज्यों में शराबबंदी की बात होती है. सबसे पहले शराब के कारोबार से होने वाली आमदनी को देखा जाता है, राज्य और देश को कितना आर्थिक नुकसान होगा, इसका आकलन किया जाता है. हालांकि अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से यह मामला काफी संजिदा है. जिसका निर्णय सरकार पर ही छोड़ देना चाहिए. लेकिन महिलाओं की मांग के अनुरूप देसी शराब पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए. क्योंकि ऐसे शराब का निर्माण कोई प्रशिक्षित वर्ग नहीं करते, बल्कि जैसे–तैसे किया जाता है. जिसके कारण कभी शराब बनता है, तो कभी ये शराब जहर का रूप ले लेता है.

**दोषी कौन?**

आम जनता और विपक्ष से बात हो, तो सरकार और सिस्टम को दोषी ठहराते हैं. सरकार ने जो नियम लागू किया है, उसके मुताबिक वे जनता को दोषी ठहराते हैं. लेकिन ऐसे मामलों का शत् प्रतिशत निराकरण हो, तो कैसे हो, इसपर विचार करना चाहिए. बाकि ऐसे मामलों में कसूरवार किसे माना जाए. यह बड़ा सवाल है. जिसे देश की जनता पर छोड़ता हूं.

# आजादी के 75 साल बाद भी बिलख रहा भारतीय समाज

प्रणय प्रबोध, राँची

भारतीय इतिहास के पन्नों को टटोले, तो पता चलेगा कि हमारे पूर्वजों को सताया गया है. कभी मुगलों ने, तो कभी अंग्रेजों ने इन्हें यातनाएं दी हैं. भारतीय समाज की रूढ़िवादी परंपराओं ने भी मानव समाज की हत्या में कोई कसर नहीं छोड़ा. चाहे वह बाल विवाह हो या फिर भ्रूण हत्या जैसा महापाप. लेकिन भारतवासियों ने यह कल्पना की थी अंग्रेजों के चंगुल से आजाद होने के बाद देश का भला होगा. यहां भला का मतलब देश का सर्वांगीण विकास है. लेकिन भारी विडंबना है कि आजादी के 75 साल बाद भी हम गृह कलेश के कारण सिर्फ विकासशील ही कहला रहे हैं, विकसित नहीं. भाई विकसित हों भी तो कैसे, क्योंकि सारी उंगलियां एक बराबर नहीं होती. देश के प्रधानमंत्री विकास की गाथा रचना चाहते हैं, तो देश और राज्य के कई ऐसे राजनेता भी हैं, जिन्हें केवल अपने पॉकेट की चिंता है. ऐसा बिल्कुल नहीं है कि ये राजनेता क्षेत्र भ्रमण नहीं करते, बल्कि इन्हें उन तमाम समस्याओं के बारे में जानकारी होती है. लेकिन सरकारी कार्यालय का पेंच ऐसा कि जो काम दो दिन में हो, उसे होने में 20 साल लग जाते हैं.

**फलना निशान पर ही वोट डालिएगा**

वोट डालना हर उस नागरिक का अधिकार है. जिसकी उम्र 18 वर्ष से अधिक है. आजादी के बाद से देश की जनता वोट तो डाल रही है. लेकिन मुद्दे आज भी वही हैं. बस परिवर्तित हुआ है तो नाम. जिसे हम विकास के नाम से जानते हैं. पहले भी उम्मीदवार रोटी,कपड़ा, मकान, पानी, स्वास्थ्य और शिक्षा के मुद्दे पर वोट मांगते थे. वर्तमान समय में भी उम्मीदवार इन्हीं को मुद्दा बनाकर वोट मांगते नजर आ रहे हैं. ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि सरकार ने संस्थान और उपकरण उपलब्ध नहीं कराए. लेकिन जितने संसाधन की जरूरत थी. वो मुहैया नहीं हो पाए. केवल झारखंड की स्वास्थ्य सेवा की बात की जाए. तो हर रोज रिम्स से लेकर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक

की हालत किसी से छुपी नहीं. कहीं स्वास्थ्य सुविधा बेहतर नहीं, तो कहीं चिकित्सकों, नर्सों और दवाओं का अभाव. शिक्षा व्यवस्था की बात करें, तो भवन बनकर खड़े हैं. लेकिन विषयवार शिक्षकों की उपलब्धता नहीं. राज्य के किसी भी जिले में चले जाइए, जिला मुख्यालय से महज 30 किलोमीटर की दूरी पर ऐसे नजारें नजर आएंगे. जिनसे आपकी नजरें हट नहीं पाएंगी. क्योंकि सुदूरवर्ती गांव में निवास करने वाली महिलाओं के माथे पर तसली, डेकची और घड़े ही नजर आएंगे. ठंड का समय है, कभी रात के समय सड़क किनारे टहल आइए. किसी भी शहर में कम से कम 100 ऐसे लोग नजर आएंगे, जो ठिठुरते ठंड में एक बोरे पर सोए नजर आएंगे. साहब ये तमाम लोग वोटर हैं. जिन्हें इंतजार है, तो केवल सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए आधारभूत आवश्कताओं की.

**शिक्षित बेरोजगारों की भरमार**

मूलभूत आवश्यकताओं में शिक्षा को भी जोड़ दिया गया है. भारतीय संविधान में शिक्षा के अधिकार का उल्लेख भी मिलता है. जिसमें प्राथमिक शिक्षा निरूशुल्क प्राप्त करने के अधिकार का वर्णन है. लेकिन अधिकतर सरकारी स्कूलों की दशा देखते ही लोग उसके चौखट पर से भाग जाते हैं. कहीं भवन है, तो शिक्षक नहीं, कहीं शिक्षक हैं, तो उपकरण नहीं. प्राथमिक शिक्षा कोई पूरी कर भी ले, तो उसे माध्यमिक शिक्षा लेनी पड़ती है, फिर धीरे–धीरे उच्च शिक्षा भी प्राप्त हो ही जाती है. इसके अलावा वर्तमान समय में युवा वर्ग कौशल की ओर भी दौड़ रहे हैं. जिनके अंदर कार्यकुशलता भी है. इन सब के बावजूद शिक्षित युवा बेरोजगार बैठे हैं. क्योंकि उनके विषय के अनुकूल रोजगार श्रृजन किया ही नहीं गया. हजारों विषयों की पढ़ाई करायी जा रही हैं. लेकिन सरकारी नौकरी की बात करें, तो महज कुछ विषयों के अध्ययन वालों का उन नौकरियों पर आधिपत्य है. इसके अलावा किसी भी कॉम्पीटिशन में सीट इतने सीमित कि युवा फॉर्म भरने में भी सोचते हैं. उम्रसीमा बीतने के बाद अगर कुछ बचता है, तो वह है स्वरोजगार, चाहे कुल्हड़ वाली चाय की दुकान हो या फिर लिट्टी–चोखे की दुकान. क्योंकि जीवन जीना है, तो कमाना जरूरी है.

**भारत का विकास**

ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि भारतीय समाज ने विकास नहीं किया. बल्कि कई ऐसी रूढ़िवादी परंपराएं थी. जो समय के साथ खत्म होती चली गयी. जो औरतें कल घूंघट के पीछे और चाहरदीवारी के अंदर सिमटी थी. वो बाहर निकलकर व्यवसाय करने लगी हैं. नारियां पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं. इतना ही नहीं जिस थर्ड जेंडर को कल तक महत्व नहीं दिया जा रहा था. वो चुनावी मैदान में नजर आ रही हैं. महिलाएं जहाज उड़ा रही हैं. भारतीय संविधान और सरकार ने सभी को समान अवसर दिया है. लेकिन जिस अंतिम व्यक्ति को विकसित करने का लक्ष्य सरकार ने लिया है. वहां तक पहुंचने के लिए और अधिक काम करने की जरूरत है. सरकार ग्रामीण विकास के लिए हर साल करोड़ों रूपए खर्च कर रही है. लेकिन जो सेवाएं लोगों को मुहैया होनी चाहिए. वो हो पा रही हैं या नहीं, इनकी मॉनेटरिंग होनी चाहिए. हर–घर नल–जल योजना जैसी योजनाओं का लाभ सुदूरवर्ती ग्रामीण इलाकों को मिलना चाहिए. स्वच्छ भारत अभियान के तहत सिर्फ शौचालय नहीं, बल्कि शौचालय में जल की व्यवस्था भी करानी चाहिए. स्कूलों में पौराणिक पद्यति के जगह स्मार्ट क्लास के जरिए पढ़ाई की व्यवस्था की जानी चाहिए. सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों में प्राइवेट की भांति बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया होनी चाहिए. जनसंख्या के अनुरूप नीति के निर्माण से ही भारत आंतरिक रूप से सशक्त बन सकता है. जब देशवासी आंतरिक रूप से सशक्त बनेंगे, तभी विदेश नीति भी कारगर साबित होगी. हम स्वस्थ रहेंगे, तो शिक्षित बन पाएंगे, शिक्षित बनेंगे, तो अर्थव्यवस्था सशक्त होगी, हर नागरिक आर्थिक रूप से समृद्ध बनेगा, तो भारतवर्ष अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से सबसे ऊपर रहेगा और भारत अन्य देशों का भाग्य विधाता बन पाएगा।

# केवाड़ी की आस

**राँची :** दशकों से बंद पड़ी केवाड़ी को भी आस है. काश फिर से कोई आता, इसे खोलता और घर के आंगन में चहलकदमी करता दिखाई देता. लेकिन ऐसी किस्मत कहां? वर्षों से बंद पड़े इस केवाड़ी के पीछे न जाने कितने किस्से छिपे हैं, कितनी यादें समेटे अब भी यह उसी रूप में खड़ा है. केवाड़ी में लगी सिकड़ी भी सिसक रही है कि काश कोई तो होता, जो उसे हिलाकर दरवाजे से मिलाता. थोड़ा झकझोर कर आवाज लगाता. लेकिन केवाड़ी और सिकड़ी अपनी दर्द भरी यातनाएं आखिर सुनाएं तो किन्हें?

गांव की अनुपम मिट्टी की सुंगध को छोड़ हम जहरीली मिट्टी और हवा के बीच शहरों की ओर दौड़ पड़े हैं. रोजगार की तलाश में हम गांव तो छोड़ जा रहे हैं. लेकिन शहर में जाकर केवल जहरीली धूल और मिट्टी खा रहे हैं. गांव में बना वह छोटा–सा घर हर रोज याद कर रहा है. उसका प्रवेश द्वार हर रोज राह देख रहा है कि कोई अब तो आ जाए. गांव की अनुपम मिट्टी को अपने मालिक का इंतजार है. जो उसमें चंद सब्जियां और अनाज ऊपजाए. लेकिन भूमि, घर, आंगन, द्वार और केवाड़ के लिए यह अब महज कोरी कल्पना मात्र रह गयी है. क्योंकि देसी बाबू बहू आने के बाद परदेसी हो गए. उन्हें उपजाना पसंद नहीं, बल्कि बाजार जाना पसंद आने लगा है।

# मिथिला की संस्कृति में झलकती है मिठास

मीनू कुमारी, छात्रा, एमिटी यूनिवर्सिटी,

**विदेह राज्य– मिथिला**

हिमालय और गंगा नदी की तलहटी के बीच स्थित प्राचीन भारत में था "विदेह राज्य", जो आज मिथिला के नाम से प्रसिद्ध है. रामायण की मानें, तो विदेह राज्य की राजधानी थी. आधुनिक समय में विदेह या मिथिला शहर नेपाल के धनुषा जिला में स्थित "जनकपुर" के रूप में जाना जाता है. मिथिला का नाम वहां के राजा मिथी के नाम पर रखा गया.

**मिथिला का इतिहास**

कहते हैं शहर जितना छोटा हो, उसका इतिहास उतना ही गहरा होता है. मिथिला का इतिहास भी कुछ अनोखा रहा है, यहां कई ऋषि, महर्षी व विद्वानों, विदूषियों, राजाओं, महाराजाओं ने जन्म लिया. जैसे जनक, सीता, विद्यापति, ज्ञागवल्क्य, आयाचि, कालीदास आदि. जिसकी झलक हमें महाभारत, रामायण, पुराण, जैन और बौद्ध ग्रन्थों में मिलती है. रामायण के अनुसार माता सीता की जन्मभूमि मिथिला रही है. श्रीराम–सीता से संबंधित विशेष स्थान होने के अतिरिक्त मिथिला देवाधिदेव महादेव के पूजन–स्थल के रूप में विशेष प्रसिद्ध है. मिथिला के कुछ प्रमुख राज्य दरभंगा, दुमका, सीतामढी, जनकपुरधाम, सहरसा, कटिहार, किशनगंज, बेगूसराय ,मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, मधुबनी, भागलपुर, देवघर, समस्तीपुर, अररिया ,जनकपुर माने जाते थे. इन सभी जगहों पर आज भी मैथिली भाषा की मिठास नजर आती है. लेकिन दुमका और देवघर 15 नवंबर 2000 से झारखंड में शामिल हो चुके हैं

**मिथिला की संस्कृति और भाषा**

मिथिला की संस्कृति विश्व विख्यात है, बात खान–पान की हो, चित्रकला की या फिर लोकगीतों की. कहा जाता है पहली बार माता सीता के विवाह मे महिलाओं ने चित्रकारी की थी, जो समय के साथ रंगोली, दीवारों, कपड़ो और कागजों पर उतरता गया. जिसे आज हम "मिथिला पेंटिंग" के नाम से जानते हैं. जिसमें खासतौर पर कुलदेवता का चित्रण होता है. हिन्दू देवी–देवताओं की तस्वीर, प्राकृतिक नजारे, जैसे– सूर्य और चंद्रमा, धार्मिक पेड़–पौधे, जैसे– तुलसी और विवाह के दृश्य देखने को मिलते हैं. इसे बनाने की विधि मां चटक रंगों का इस्तमाल होता है। > देखे P03

# सोहराय कला में दिख रही झारखंडी संस्कृति की झलक

**ओम प्रकाश कुमार**

**राँची :** झारखंड एक ऐसा प्रदेश है, जिसका नाम सुनते ही मन में कई विचार आते हैं, जहां खनिज संपदाएं तो है ही, साथ ही संस्कृति और कला के नजरिये से भी भारत के धनी राज्यों में से एक है। झारखंड में कई तरह की बोलियां, आदिवासी संस्कृति, कला की झलक देखने को मिलती हैं। झारखंड भी अपने ऐसे समृद्ध लोक संस्कृति और आदिवासी चित्रकारी के लिए जाना जाता है। यहां 15 से भी अधिक तरह की आदिवासी चित्रांकन कलाएं हैं, लेकिन इससे आज की पीढ़ी अंजान है। इनमें सोहराई चित्रकारी कला खास है, जिसमें जल–जंगल–जमीन का तालमेल दिखता है। आदिवासी संस्कृति औऱ उनके प्रति प्रेम की झलक देखने को मिलती है।

सोहराई एक आदिवासी कला है। इसका प्रचलन हजारीबाग जिले के बादम क्षेत्र में आज से कई वर्ष पूर्व शुरू हुआ था। इस क्षेत्र के पहाड़ियों की गुफाओं में आज भी इस कला के नमूने देखे जा सकते हैं। कहा जाता है कि बादम के राजा ने इस कला को निखारा था। जिसकी वजह से यह कला गुफाओं की दीवारों से निकलकर घरों की दीवारों में अपना स्थान बना पाने में सफल हुई थी।

झारखंडी संस्कृति में सोहराई कला का महत्त्व सदियों से रहा है। बदलते परिवेश में कथित आधुनिकता के नाम पर लोगों का दुर्भाग्यवश इस कला के प्रति उपेक्षाभाव इसके अस्तित्व पर संकट बनकर आ खड़ा हुआ है। राज्य के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में सोहराई पर्व के दौरान देसज दुधि माटी से सजे घरों की दीवारों पर मि. हलाओं के हाथों के हुनर अब बमुश्किल से देखने को मिलते हैं। अब दुधि माटी की जगह चूने ने ले ली है।

उस समय ऐसा कोई घर नहीं था जहां की महिलाएं इस कला से अपने घरों–दीवारों को सजाना नहीं जानती हों। आज स्थिति बदल चुकी है। अब तो इसके कलाकार और इसे जाननेवाले लोगों की संख्या गिनती में रह गयी है। ऐसे गिने–चुने नामों में से एक नाम है

रूकमणी देवी । हजारीबाग जिले के बड़कागांव प्रखंड की रहनेवाली रूकमणी कहती है कि यह कला मैंने अपनी मां से सीखी थी और मां ने अपनी मां से। वह बतलाती है कि आज इस कला को सीखना तो दूर, लोग इसे जानते तक नहीं हैं।

रूकमणी आदिवासी संस्कृति में इस कला का महत्त्व जीवन में उन्नति से लगाया गया था, तभी इसका उपयोग दीपावली और शादी–विवाह जैसे अवसरों पर किया जाता था। जिससे कि धन और वंश दोनों की वृद्धि हो सके। रूकमणी बताती है कि इस कला के पीछे एक इतिहास छिपा है। जिसे अधिकांश लोग जानते तक नहीं हैं।

ऐसा माना जाता है कि बादम राज में जब किसी युवराज का विवाह होता था और जिस कमरे में युवराज अपनी नवविवाहिता से पहली बार मिलता था उस कमरे की दीवारों पर यादगार के लिये कुछ चिह्न अंकित किये जाते थे। ये चिह्न ज्यादातर सफेद मिट्टी, लाल मिट्टी, काली मिट्टी या गोबर से बनाये जाते थे। इस कला में कुछ लिपि का भी इस्तेमाल किया जाता था जिसे वृद्धि मंत्र कहते थे। बाद के दिनों में इस लिपि की जगह कलाकृतियों ने ले ली। जिसमें फूल, पत्तियां एवं प्रकृति से जुड़ी चीजें शामिल होने लगीं। कालांतर में इन चिन्हों को सो. हराई या कोहबर कला के रूप में जाना जाने लगा। धीरे–धीरे यह कला राजाओं के घरों से निकलकर पूरे समाज में फैल गयी। राजाओं ने भी इस वृद्धि कला को घर–घर तक पहुंचाने में काफी मदद की। पर आज मदद तो दूर इस सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिये भी कोई आगे नहीं आता।

झारखंड के हजारीबाग के गांवों के घरों की मिट्टी के दीवारों पर उकेरी जाने वाली सोहाराय व कोहबर कला पर कोई और दावा नहीं ठोक सकता। देश में अब कोई भी इसे अपनी या अपने राज्य की कलाकृति नहीं बता सकता। सोहराय व कोहबर कला को झारखंड की पहचान बनाने के लिए 2017 में हजारीबाग के उपायुक्त रविशंकर शुक्ला ने इसकी शुरुआत की। नेशनल लॉ स्कूल आफ इंडिया यूनिवर्सिटी बेंगलुरु के डॉ. सत्यदीप सिंह से संपर्क कर 2018 की शुरुआत में लॉ यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु से डॉ. सत्यदीप सिंह के नेतृत्व में टीम हजारीबाग सर्वे को पहुंची। फिर इस कला पर काम कर रहीं सोहराय कला महिला सहयोग समिति के संस्थापक अलाम इमाम के माध्यम से प्रजेंटेशन और दस्तावेज तैयार कर सौंपा गया। जीआइ टैग से जुड़े मूल दस्तावेज 39 पेज के हैं और इससे जुड़े दस्तावेज करीब 350 पेज के। सभी प्रक्रिया पूरी करने के बाद वर्ष 2020 में झारखंड की सो. हराई–कोहबर चित्रकला को भौगोलिक संकेतक (ळ.ए. ज्ह) प्राप्त हुआ है, जो विशेष रूप से हजारीबाग जिले में मि. हलाओं द्वारा बनाई जाने वाली भित्ति चित्रकला है। इससे सोहराय व कोहबर कला सीधे तौर पर झारखंड की पहचान से जुड़ गया है।

शायद रुक्मणी देवी और उपायुक्त का अथक प्रयास नही होता तो इस कला को गुमनामी की गुफाओं में लुप्त होने से कोई नहीं बचा पाता और आनेवाली पीढ़ियां सोहराई को इतिहास के पन्नों में ही ढूंढा करती ।

# वादियों की खुशबू, नाशपाती की मिठास, चलिए चलते हैं पहाड़ों की मल्लिका नेतरहाट

विनिता चौबे

**रांची :** घूमने की बात हो और नेतरहाट का जिक्र न हो, तो फिर बेईमानी हो जाएगी. यकीन मानिए यहां की पहाड़ों की सुंदरता के बीच आप कहीं खो जाएंगे. तो फिर आइए ले चलते है आपको नेतरहाट की सैर पर. झारखंड की राजधानी रांची से करीब 155 किलोमीटर दूर लातेहार जिले में बसा है नेतरहाट. इसकी खूबसुरत वादियों के चलते इसे 'छोटानागपुर की रानी' का दर्जा भी दिया गया है. नेतरहाट को झारखंड का दिल भी कहा जाता है, जहां हर तरफ अपार खूबसूरती है. आप प्रकृति के बीच चिड़ियों का चहकना भी सुन सकते हैं. ये हिल स्टेशन सनराइज और सनसेट के लिए भी फेमस है. अगर आप सुकून और शांति चाहते हैं, तो नेतरहाट उसके लिए परफेक्ट प्लेस है।

**इतिहास के पन्नों में नेतरहाट**

कहा जाता है कि पहले यहां बांस का बहुत बड़ा जंगल था, जिसे नेतरहातु कहा जाता था. बांस को स्थानीय भाषा में नेतुर कहते हैं. उसी के नाम पर इस जगह का नाम नेतरहाट पड़ा. नेतर यानी कि बांस और हातु मतलब हाट. समुद्र तल से 3,622 फीट की ऊंचाई पर स्थित इस हिल स्टेशन पर वाटरफॉल से लेकर कई खूबसूरत झीलें हैं,

जो आपके सफर को यादगार बना देंगे।

नेतरहाट का पहाड़ चीड़ के जंगलों से घिरा हुआ है. अगर आप नेतरहाट में कुदरत की खूबसूरती और ऐडवेंचर करना चाहते हैं, तो आपको यहां ट्रैकिंग करना चाहिए. नेतरहाट, ट्रैकिंग के लिए अच्छी जगह है. यहां के जंगल आपको बेहद खूबसूरत लगेंगे. वैसे भी प्रकृति की तो हर एक चीज खूबसूरत है. जब आप पहाड़ की ऊंचाई से नेतरहाट की खूबसूरती देखेंगे, तो यकीन मानिए आपको झारखंड से प्यार हो जाएगा।

**नेतरहाट में घूमने के लिए कुछ फेमस जगहें**

**मंगोलिया प्वाइंट** : सबसे पहले बात करते है मंगोलिया प्वाइंट की. जिसके चलते नेतरहाट को जाना जाता है, या यूं कह ले कि सारी कहानी यहीं से शुरू होती है. मंगोलिया प्वाइंट या मैगनोलिया प्वाइंट के नाम से जाना

जाने वाला ये जगह पहाड़ों को निहारने और डूबते सूरज की खूबसूरती को देखने के लिए जाना जाता है. कहा जाता है कि अंग्रेजों के शासनकाल में एक ब्रिटिश लड़की आई थी, मैगनोलिया. उसे यहां एक स्थानीय लड़के से प्यार हो गया, लेकिन समाज ने उसके प्यार को स्वीकार करने से मना कर दिया. तब उसने इसी पहाड़ी से कूदकर जान दे दी थी. उसके बाद से इस जगह का नाम मै. गनोलिया प्वाइंट पड़ गया।

**घाघरी वाटरफॉल :** घाघरी वाटरफॉल असल में दो झरने हैं. लोअर घाघरी और अपर घाघरी वाटरफॉल. दोनों ही झरने बेहद खूबसूरत हैं. यहां के खूबसूरत नजारें आपको कहीं गुम कर देगी. निचला घाघरी झरना नेतरहाट से 10 किमी. की दूरी पर है और ऊपरी घाघरा झरना 4 किमी. की दूरी पर. निचला घाघरी वाटरफॉल में 32 फीट की ऊंचाई से जब पानी गिरता है, तो इसकी खूबसूरती देखते ही बनती है. वाटरफॉल के आसपास इतने घने जंगल हैं कि सूरज की किरणें भी जमीन तक नहीं पहुंच पाती. निचले घाघरी वाटरफॉल की तरह, ऊपरी घाघरी वाटरफॉल भी बेहद खूबसूरत है. इसके आसपास घने जंगल नहीं है. ये जगह पिकनिक के लिए परफेक्ट है. अगर आप अपने फैमिली और दोस्तों के साथ नेतरहाट आते हैं, तो आपको यहां जरूर आना चाहिए. घाघरी झरनों को देखे बिना नेतरहाट की सैर अधूरी रहेगी।

**नाशपाति गार्डन :** नेतरहाट की एक अलग खूबसूरती से आप नाशपाति बगान में रूबरू होंगे. जिनकी खूबसूरती को देखकर आपका मन खुश हो उठेगा. यहां से जाने के बाद भी नाशपति का ये खूबसूरत गार्डन आपके जेहन में जीवित रहेगा. अक्सर लोग नेतरहाट आते हैं लेकिन इस जगह पर जाना भूल जाते हैं. अगर आप नेतरहाट आते हैं, तो इस जगह को अपनी बकेट लिस्ट में जरूर रखें।

**कोयल व्यू प्वाइंट :** नेतरहाट बस स्टैंड से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर चीड़ के वनों के बीच स्थित कोयल व्यू प्वाइंट एक जगह है. यहां पहाड़ों के पीछे से उगते हुए सूर्य की किरणें कोयल नदी की जलधारा पर पड़ती हैं, तो एक मनोहारी दृश्य उत्पन्न होता है. बता दें कि कोयल नदी यहां से पांच किलोमीटर की दूरी पर नीचे घाटी में प्रवाहित होती है।

**शैले हाउस :** लाट साहेब का बंगला के नाम से मशहूर शैले हाउस काष्ठ (लकड़ी) कला का अद्भूत नमूना है, शैले का शाब्दिक अर्थ होता है लकड़ी से निर्मित इमारत. इसका निर्माण वर्ष 1901 में किया गया था. बाद में जिला प्रशासन के द्वारा इसका सुंदरीकरण कराया गया है. यहां उपायुक्त, लातेहार का कैंप कार्यालय भी है।

प्रकृति की खूबसूरती और अधूरी प्रेम कहानी परोसने वाला यह पर्यटन स्थल पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है. लातेहार जिला नक्सल प्रभावित होने के कारण बहुत अधिक विकसित नहीं हो पाया. लेकिन नेतरहाट जैसे पर्यटन और ऐतिहासिक स्थल ने इसका मान बढ़ाया है. खासकर ठंड का मौसम आते ही लोग परिवार और दोस्तों के साथ सैर–सपाटे के लिए निकलते हैं. लेकिन उनके करीब जो जगह हैं, उन्हें भूल जाते हैं. तो एक बार लातेहार आइए और नेतरहाट की वादियों में खो जाइए. समय की पाबंदियां तो आपसे हल कहेंगी कि चलो अब जाना है. लेकिन यकिन मानिए दिल यही कहेगा, ठहर जा जरा।

# कविता

## कविता–बचपन

बचपन में अब
कुछ बचपना न बचा
बंद अंधेरे कमरे में कहीं
सिसकियां भर के रो रही
दौड़ती भागती इस जिंदगी में
हर मासूम बन रहा गुलाम है

खेल छूटी मिट्टी छूटी
छूटने लगी मासूम हरकतें
दिखता नहीं बच्चा कहीं
हर बच्चा अब सयाना हुआ
झूठी शान शौकत के लिए
बच्चों में लगी होड़ है

घबराई सी डरती हुई
बचपन गली में खो गई
गीली डंडा छुपम छुपाई
कल की जैसे बात हुई
मोबाइल के कई गेम अब
बच्चों को खूब बहलाती है

जंग लग रही दिमाग में
तन हो रहा दुर्बल बहुत
आंखों पर चश्मा बैठ कर
इतरा कर निगल रहा बचपन

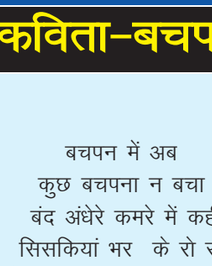

अर्चना तिवारी
बरोड़ा,गुजरात

## करो नई शुरुआत

कहाँ गया तुम्हारा खिलखिलाता चेहरा..,
वो मुस्कान जिसमें मैं खो जाता था ?
क्यूँ सूना है तुम्हारी सपनों की दुनियाँ..,
ये आँखे जिनमें कभी मैं खो जाता था ?

तुम हँसती थी तो हँसी में मैं
अपने दुःखों को भूल जाता था।
तुम्हारी आँखों से झलके सपनों में मैं
अपने आप को भूल जाता था॥

तुम्हारे माथे पे बन रही चिंता की लकीरों से
कितना बेचौन मैं होने लगा हूँ।
तुम्हारे होंठों की उदासी को देखने के बाद
मैं अपनी खुशी को खोने लगा हूँ॥

क्यूँ तड़प रही हो तुम इस कदर जान..,
आओ न तुम्हारे दिल को मैं सुकून देता हूँ।
क्या हो गया अगर कुछ खो दिया है तुमने..,
आओ न तुमको मैं फिर से पाने की जुनून देता हूँ॥

क्या करोगी तुम यूँही मयूष बैठे रहकर ?
आओ न मिलकर फिर से एक सफर शुरू करते हैं।
फिर चली जाना तुम अपने रास्ते में...।
आखिर क्यूँ लोग नई शुरुआत करने से डरते हैं !!

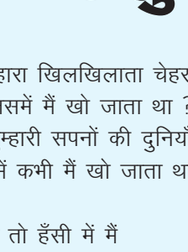

An Alone Krishna

## सोचा आज प्यार से प्यार के लिए कुछ लिख दूँ

दिमाग से बहुत लिख लिए खत
आज दिल से दिल के लिए कुछ लिख दूँ
छु ले जो मेरे अल्फाज उसके दिल को
मैं ऐसी कोई बात लिख दूँ!!

सोचा आज प्यार से प्यार के लिए कुछ लिख दूँ

मेरे लिए कितना लाज़मी है वो
इसी पर एक पूरी किताब लिख दूँ
उसकी उन निगाहों की मस्ती को मैं
उसके शरारत के नाम लिख दूँ!!

सोचा आज प्यार से प्यार के लिए कुछ लिख दूँ

मिलने पर कितना चाहूँ उसे
उस पर पूरी बयान लिख दूँ
ना मिलने पर खुदा से कितना मांगा उसे
उसके लिए किए हर पल का इंतजार लिख दूँ!!

सोचा आज प्यार से प्यार के लिए कुछ लिख दूँ

खत ही सही पर उसके लिए
अपने जज्बातों का पैगाम लिख दूँ
बिना उसके बहुत जी ली ज़िंदगी
अब उसके संग रहने का ऐलान लिख दूँ
सोचा आज प्यार से प्यार के लिए कुछ लिख दूँ ।।

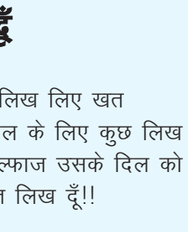

✍ रूपा प्रसाद

## मजबूत बेटी हो गई मजबूर

बेटियों की भी होती है अपनी जिंदगी
मा– बाप की इज्जत के लिए बन जाती है बंदगी
माँ– बाप सोचते हैं घर बसा दूँ इनका ,
बस बोझ उतार लो अपना
उन्हें कौन बताये की
बेटियों के भी होते हैं अपने सपने .
बेटी तो बड़ी हो रही होती है
तो उसे कहाँ पता की अगर उनका ना होगा
पराये लोगों को अपना समझ कर
अपना दृ अपना करना होगा
जब बेटी को एक अच्छा घर संसार न मिले ,
तो मुरझा जाते हैं वो कलि जो फुल जैसे थे खिले खिले .
कल तक जो बेटियों को
घर के अन्दर सहेज कर रखे थे इज्जत के लिए ,
जब आज तलाक शुदा हुई ,
बाहर भेज दिए सपने पुरे करने के लिए
क्योंकि आज ओ कुंवारी न रही ,
तभी तो मजबूत बेटी हो गई मजबूर

**डोली कुमारी,**
केंदुवा, हजारीबाग

## मिथिला की संस्कृति में झलकती है मिठास

.....जैसे की लाल, हरा, कला, नीला आदि. पुराने समय में इस चित्र को खुशी के मौके पर बनाया जाता था. जैसे शादी–विवाह, खेतों में अच्छी फसल आने पर. मगर समय दर समय इसे बनाने के मायने भी बदलते गए मगर आज भी इस कला की अपनी अगल पहचान है.

**लोकगीत**

मैथिली संगीत भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे प्राचीन संगीत में से एक है. जिसे विभिन्न प्रकार के अनुष्ठानों के दौरान बजाया जाता है. मैथिली संगीत को देवताओं का गीत भी कहा जाता है. इसे महिलाएं शादी के दौरान या फिर किसी शुभ कामों मे गाती हैं. कई कलाकारों ने मिथिला गीत से राष्ट्र भर में अपना नाम कमाया है. आज के युग के मे भी सुनी जानी वाली सबसे पुरानी गायिका सारदा सिन्हा अपने लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध हैं. जो कि मिथिला से संबंध रखती हैं. वर्तमान समय में चर्चित लोकप्रिय गायिका मैथिली ठाकुर मिथिला भाषा में गायन का लोहा मनवा रहा है. जो कि न केवल भारत में ही मिथिला का नाम रौशन कर रही है. बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मि. थलांचल को ला चुकी है।

मिथिला की बात करें, तो मुख्य रूप से चार चीजें काफी प्रसिद्ध मानी जाती हैं. जिनमें मिठाईयां, खासकर रसगुल्ले, मीन, पान और मैथिली. इन चारों के संगम के बिना मिथिला फिकी रह जाती है. बाकि यहां की मेहमान नवाजी की बात करें, तो विश्व प्रसिद्ध है. क्योंकि यहां मे. हमानों का आवाभगत बिल्कुल अलग तरीके से किया जाता है. भारतीय संस्कृति को संरक्षित रखने में मिथिला का सबसे बड़ा योगदान माना जाता है. बाकि छैं–छौं वाली बोली से तो हम सब रूबरू हैं ही. इनकी भाषा में जो मिठास है, उसे हर कोई अपनाना चाहता है, लेकिन हर भाषा का अपना महत्व है. भरतभूमि पर जन्म लेने के बाद अगर मिथिलांचल नहीं गए, तो फिर क्या गए? चलिए एक बार मिथिलांचल जा आते हैं. थोड़े मिठास,मीन और मैथिली संगीत का मजा ले आते हैं।

झार न्यूज में विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 9430397436

# खोरठा भासाक श्भीष्म पितामहश्र श्रीनिवास पानुरी जी

संदीप कुमार

**रांची :** खोरठा भासाक सिस्ट साहितेक जनक, श्बाल्मिकीश आर श्भीष्म पितामहश कर नाम से जानल जा हथ खोरठाक महान कवि श्रीनिवास पानुरी । इनखर जनम 25 दिसम्बर 1920 इस्वीञ झारखण्ड राइजेक धनबाद जिलाक बरवाअड्डा गांवे एगो साधारन पइरवारे हेल रहे । इनखर बापेक नाम शालिग्राम पानुरी आर मायेक नाम दुखनी देवी हइन। पानुरी जी छउवे घरी चनफन आर चेठगर रहथ संगे आपन मांय माटी मातरीभासाक परति अगाध परेम हलअइन। इनखर मगजे छउवे बेरा ले आपन भासाक खातिर कुछो करेक सपुन हल।

गरीबीक चलते बेसी पढ़ाइ नाञ करे पारला तावो पानुरी जी आपन लिखाइ–पढ़ाइ कोन्हो रकम 1939 में मेटरिक परिक्छा लिइख पास करला । हाँलाकि उनखर पढ़ेक मन त हलअइन मेन्तुक भगवानों उनखर संग नाञ देला काहे कि 1944 बछरें उनखर मांय ई दुनियाञ के छोइड़ के चइल देला । सइ तखने पानुरी जीक कंधाञ घार पइरवार चलवेक बड़का बोझ लदाइ गेल । घर पइरवार चलवे आर आपन आप के सम्भरवें खातिर बरवाअड्डाक पुरना बजारे पान गुमटीक एगो दोकान खोइल देला । आर कोन्हो रकम आपन पइरवार के पेट पोसे लागला । इनखर बाप खेती–बारीक काम करो हलथ । मेन्तुक चासाक कामे की घर चले । पानुरी जी आपन पढ़ाइ छोइड़ के पान, चुन आर कत्थाक बेपार सुरू कइर देला । एतना हेलो बादे पानुरी जीक मांय माटी आर मातरीभासाक परति परेम आर कम नाञ भेल हलअइन।

पानुरी जी एगो जनवादी विचार धाराक लोक रहथ तकरे चलते झारखंडेक नेता बिनोद बिहारी महतो आर ए.के राय से ढ़ेइर मेल जोल रहे । ई सब जहिया धनबाद जाइ तला तखन इनखर पान गुमटीञ पान खाय के जाइ तला आर दू चाइर गो गीत–कविताउ सुनइतला । एहे लगस्तर चलइत रहल ।

पानुरी जीक खोरठा साहिते जोगदान – पानुरी जी साहित जगते 1946 में आपन गोड़ राखला जखन कवि सम्मेलन में गीत आर कविता सुने पइला हाँलाकि पानुरी जी छउवा गरी ले रहे गीत गावो हलथ आर कविता लिखो हलथ मे. न्तुक सुनल बादे इनखर मन गीत कविता लिखेक बाटे टानाइल । आर लगस्तर लिखइत रहला । संगे संग उनखर परिचय बोड़– बोड़ कवि साि. हतकार संगे हवे लागल जकर में राहुल सांकृत्यान , राधाकृष्ण , हंस कुमार तिवारी , राम दयाल पाण्डेय, जानकी वल्लभ शास्त्री , भवानी प्रसाद मिश्र, वीर भरत तलवार आरो– आरो परमुख रूपे रहथ ।

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन जी उनखर

श्रीनिवास पानुरी
25 दिसम्बर 1920 - 07 अक्टूबर 1986।

नामे एगो चिठ्ठी लिखला जे ई नियर हे – मातृभाषाओं का अधिकार कोई छीन नहीं सकता है न ही लोक कविता को आगे बढ़ने से कोई रोक सकता है, हाँ कविता करने में आप साहित्यिक कवियों की कविताओं की अनुकरण हर्गिज न करें । उसके लिए आदर्श है लोक कवि और उनकी अछुती भाषा ।ष ई चिठ्ठी से पानुरी जी के ढ़ेइर परभावित करला संगे खोरठा लिखे में प्रेरित भी हेला ।

पंडित रामदयाल पाण्डेय जी पानुरी के खोरठाक श्बाल्मिकीश आर श्अखय बोरश कहल हथ । एतने नाञ पाण्डेय जी एगो जगहें कहल हथ जे – ष मुझे तो अद्भुत युग चेतना पानुरी जी की रचना से हुई है और कितनी ही पंक्तियाँ से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं । उनकी पंक्ति बड़ी ही युग–चेतना सम्पन्न उद्बोधक तथा ओजस्विनी तेजस्विनी है।ष एतने नाञ खोरठा साहितकार विश्वनाथ दसौधीं श्राजश जी त इनखा खोरठाक श्भीष्म पितामहश कहल हथ ।

पानुरी जी आपन पान गुमटी त चलाइबे कर हला संगे– संग खोरठा में हूं आपन कलम के सनसनाइ के चलावते रहला अंते एगो खोरठाक पहिल किताब श्बाल किरणश 1954 में छपाइ देला । एहे लगस्तर कलमेक धारा चलइते रहला जहां साहितेक भिनु–भिनु विधा कविता, कहनी, उपन्यास , नाटक, खंड काइब आरो लेख लिखइत रहला आर एगो श्मातृभाषाश नामेक एगो पतरिका 1956–1957 में बहरवला । सइ समय तक पानुरी जी ढ़ेइर नामजइका होइ गेल रहथ । कुछो बछरेंक बादे एगो खोरठा भासाक विकास खातिर एगो समिति बनाउला । आर 1970 में श्खोरठाश नामेक एगो दूसर पतरिका बहरवला । राँची विश्वविद्यालय कर अंतर्गत, जनजातीय एंव क्षेत्रीय भासा विभागेक गठन भेल जहां खोरठाक पढ़ाइ 1984 में सुरू भेल । पानुरी जी हुवांक सिलेबस बोर्ड कर आजीवन सदस्य बनला । पानुरी जी सदस्य बनल बादे खोरठा भासा में आरो बइढ़– चइढ़ के काम करइत रहला मेन्तुक ई दुनियाञ के जे रित बनल हे, तकरा आइज तक कोइ मिटवे बा टाले नाञ पारल हथ , माने पानुरी जी 07 अक्टूबर 1986 के आपन भरल पुरल पइरवार आर खोरठा जगत के छोइड़ पांच तत्वे मेसाय गेला । पानुरी जी आइझ हामनिक बीचे नेखथ मेन्तुक उनखर विचार आइझ हामनिक ठांवे एखनो गदगदाइ रहल हे ।

**उनखर परमुख रचना**

**कविता संग्रह–** बाल किरण,आँखिक गीत, तितकी

**खंड काव्य –** रामकथामृत , अगनि परीछा, मेघदूत।

**नाटक –** उद्भासल कर्ण , चाभी–काठी ।

आरो अइसन ढ़ेइर रचना हइन जे एखन तक छपल नखइ – पारिजात (काव्य), अपराजित (काव्य), मोहभंग , हमर गाँव, भ्रमरगीत, युगेक गीता , छोटो जी (हास्य–व्यंग्य) समाधान , मेरे गीत । कहनी – रकतें भींजल पाँखा। हालाँकि इनखर आरो अइसन ढ़ेइर रचना के पता नाञ चलल हे । एखनहु इनखर रचना में शोध करेक जउरत हे ।

पानुरी जी वाकइ में पानुरी जी रह हला इनखर भासा सइली एकदम ठेठ खोरठा तकर संगे हिन्दी करो परभाव पावा हल । इनखा खोरठाक श्सिस्ट साहितेक जनकश कहल गेल हे ।

## 25 दिसम्बर के खोरठा दिवस सह खोरठा महासम्मेलन

**रांची :** पइत बछरेक रकम ई बछरो खोरठा छेतरे 25 दि. सम्बर के खोरठा दिवस मनवेक उता–सुता चइल रहल हे । तोहिन के बतवे चाहो हिये कि ई खोरठा दिवस खोरठा सिस्ट साहितेक जनक पानुरी जीक जयंतीक अवसरे पइत बछरें खोरठा दिवसेक रूपे मनवल जा हइ। टावान मिलल हे कि पटेल छात्रावास रामगढ़ में खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति परिषद् कर बाटे ले खोरठा दिवस मनवल जाइ रहल हइ। परिषद् कर अध्यक्ष डॉ. बी एन ओहदार जी कहला ई बछर खोरठा दिवस सह खोरठा महासम्मेलन मनाइब । जेकर में खोरठा साहित्यकार,

गीतकार, गायककार आरो भासा परेमी रहता । ई सरंजामें सांसकिरतिक काजकरमो करल जीतइ संगे खोरठा किताबेक लोकार्पण भी करल जीतइ ।

एकर बादे देवघर में हूं धूमधाम से खोरठा दिवस मनवेक काम चइल रहल हे । ई समितिक सदस्य फाल्गुनी मरीक कुशवाह जी कहला की ई बेर खोरठा दिवस देवघर जिलाक मधुपुर में बिसेस मनवल जाइ रहल हे । आसा हे कि खोरठा भासा परेमी बेसी बेसी लोक जुमता आर सरंजाम के सफल बनवता ।

पानुरी जीक घर डींडा बरवाअड्डा में हूं खोरठा दिवस मनवेक उता सुता चइल रहल हे । आयोजक कर्ता विनय तिवारी जी कहला की ई सरंजाम ढ़ेइर बोड़ हवे वाला हे जेकर में टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो जी अइता । आरो कहला की हिंञा खोरठा किताब करो विमोचन हतइ। एकर छाड़ा आरो स्कुल कॉलेजे मनवेक टावान मिलल हे

## खोरठा कविता

### चाल रे जुवान, होलो बिहान

चाल रे नूनू, चाल रे जुवान(युवा)
होलो बिहान, चलें खरियान

धान के बींड़ा, उठाये ले हाथें–हाथ
डंगाये देबे साब बींड़ा साथे–साथ
पाबें वोकरास पिला–पिला धान
चाल रे जुवान , होलो बिहान

धान कुटी के पाबें चार (चावल)
वोहे हेको हमनिक जीवन आधार
नया चार के ही करभीं नेवान (नवान्न पर्व)
चाल रे जुवान, होलो बिहान

चार सें ही बनतो पुआ–खीर
चार के ही बनतो माड़–भात
खाय के जेकरा बनभीं पहलवान
चाल रे जुवान, होलो बिहान

विवेकानंद विमल
(मधुपुर, देवघर)

## खोरठा गीत

### चल गे सजनी

**चल गे सजनी मेला देखे झारखंडी बाजार गे**
**मेलवा हो लागल, लागल हो मीना बाजार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

**खाजा खिलैबो गाजा खिलैबो, खिलैबो मगही पान गे**
**बैठा के तारामाची पर देखैबो सोंसे बाजार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

**मौत के कुआं देखैबो, गढ़वा में मोटर कार गे**
**बाइस्कोप में तोरा देखैबो दिल्ली के मीना बाजार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

**लागल हो कठपुतली नाच फिर्र-फिर्र नाचे हो राजा-रानी**
**होर बजेगी, होर बजेगी बोले हो सोंसे बाजार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

**बिजली के लड़की देखैबो कामख्या के जादूगरनी गे**
**बानर के नाच देखैबो घुरैबो सोंसे बाजार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

**कारे-कारे फुदना ले देबो, लाल-पियर टिकुलिया गे**
**चूड़िया ले देबो टह-टह लाल करिहें सोरह सिंगार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

**फोकना लेके दुनू हथा में चूसबै लेमनचुसवा गे**
**बैठ के वेहें गछा तर करबै नैना दु चार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

**घुरै घरी संझिया के देखबै हमनी नटकवा गे**
**लागल हो मेलवा कतै सुंदर चल जल्दी बाजार गे।**
**चल गे सजनी मेला देखे.....।**

विश्वजीत कुमार 'विश्वकिरण'

## Artists of Jharkhand

**मनीष महतो**, तमाड़, रांची

**प्रियंका कुमारी,**
**एमिटी यूनिवर्सिटी, रांची**

टिंकू कुमार, हजारीबाग

**सौरभ प्रामाणिक,**
चांडिल, सरायकेला–खरसावां

## गंगा संवाद यात्रा की शुरूआत

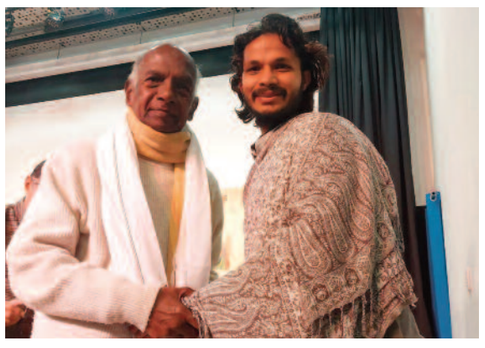

आज जरूरत है की हमसभी लोग पर्यावरण को लेकर कार्य करे। गोविंदाचार्य ने कहा कि गंगा केवल जल. निकाय नहीं है, बल्कि जैसे प्रभु श्रीराम भारत की अस्मिता की पहचान हैं, वैसे ही गंगा भारत की प्राण है। यह यात्रा संवाद के साथ संयम यात्रा भी है, संबंध यात्रा भी है द्य राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के संरक्षक केएन गोविंदाचार्य की अगुवाई में मंगलवार को गंगा संवाद यात्रा की शुरुआत हुई। यात्रा घाट नरौरा में गंगा पूजन और कलश स्थापना के साथ आरंभ हुई। घाट पर औषधीय गुणों से भरपूर पवित्र रुद्राक्ष का पौधा भी लगाया गया। इस अवसर पर गोविंदाचार्य ने कहा कि गंगा केवल एक नदी नहीं है, यह एक जीवित निकाय है जिसकी शरण स्थली में अनगिनत प्राणी अपना जीवन चक्र पूरा करते हैं। आज भी इसकी गोद में करोड़ों भारतीय अपना जीवन गुजार रहे हैं। लेकिन प्रदूषण के कारण आज गंगा का जीवन संकट में पड़ गया है, जिसे बचाना जरूरी है। क्योंकि ऐसा न करने से करोड़ों लोगों और अनगिनत जीवों के जीवन पर अस्तित्व का संकट मंडरा सकता है, जिसे बचाना संभव नहीं होगा। उन्होंने कहा कि सरकार के साथ यह समाज के लोगों की भी जिम्मेदारी है कि वे गंगा को प्रदूषण से बचाएं और इसका प्रवाह अविरल रखने में मदद करें।

गोविंदाचार्य ने कहा कि गंगा केवल जलनिकाय नहीं है, बल्कि जैसे प्रभु श्रीराम भारत की अस्मिता की पहचान हैं, वैसे ही गंगा भारत की प्राण है। यह यात्रा संवाद के साथ संयम यात्रा भी है, संबंध यात्रा भी है। अगर गंगा से मां का नाता है, तो पुत्र का कर्तव्य भी समझना होगा। भारत संबंधों का समाज है, कोरोना महामारी ने यह सिखाया है कि धन, मकान, जमीन महत्वहीन है, संबंधों का आदर और पहचान जरूरी है।

राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के राष्ट्रीय कार्यकारी संयोजक सुरेंद्र सिंह बिष्ट ने कहा कि नदी में प्रदूषण में वृद्धि के लिए संबंधित क्षेत्र के तहसीलदार और जिला. धिकारी को जवाबदेह बनाना चाहिए, इस कार्य में विफल रहने पर उनकी बर्खास्तगी का नियम हो। उन्होंने कहा कि यात्रा के आरंभ में ही जानकारी में आया है कि गंगा सफाई के लिए दोषी 16 नाकारा अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केंद्र सरकार से आग्रह किया है।

राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के राष्ट्रीय सह–संयोजक जगदीश ममगाईं ने बताया कि बुलंदशहर में मंगलवार को लगभग 6 किमी लंबी यात्रा डिबाई तहसील के आयुष्मान फार्म हाउस से दीनदयाल चौक होती हुई घाट नरौरा में गंगा आरती के साथ पहले दिन की यात्रा समाप्त हुई। दूसरे दिन की यात्रा गांधी घाट नरोरा से आरंभ होगी और संभल के दफ्तर में पहुंचकर समाप्त होगी।

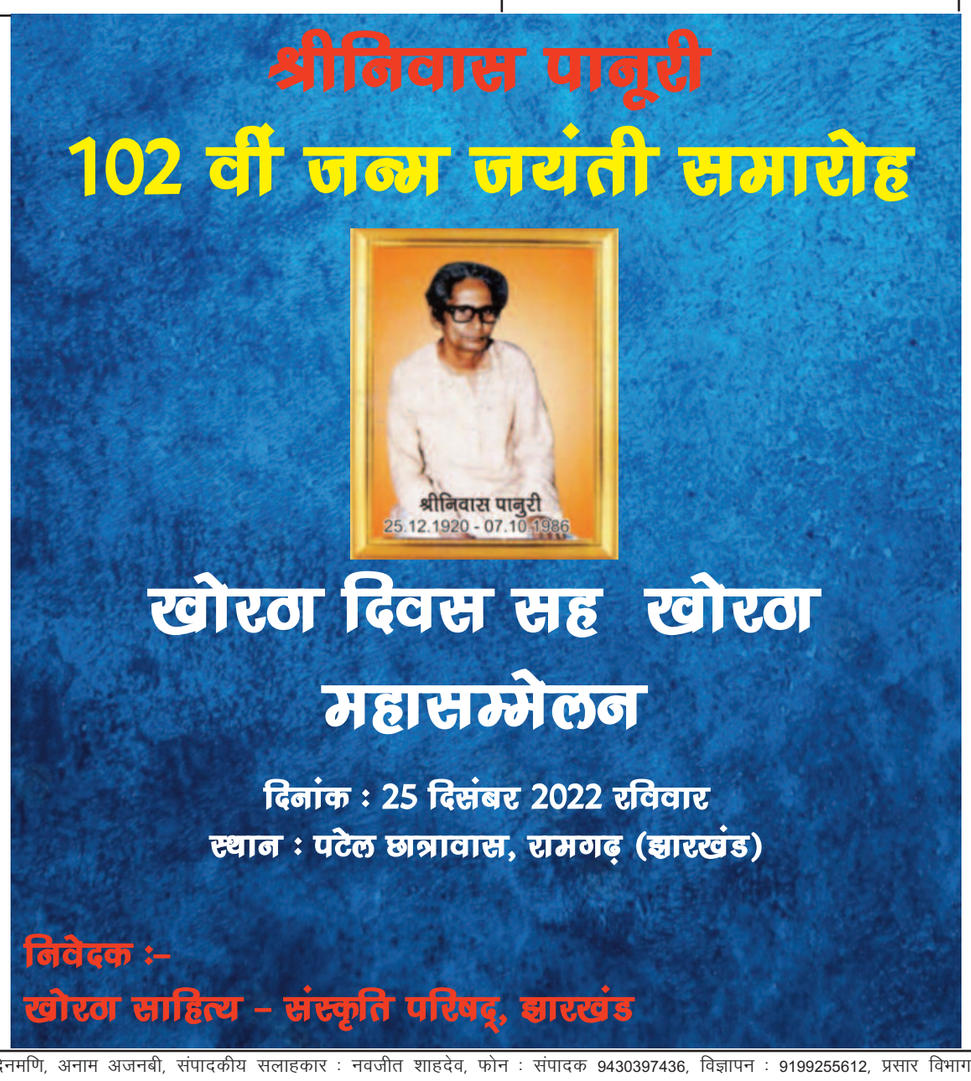

वर्ष : 01, अंक : 10, रजिस्ट्रेशन : UDYAM-JH-19–0000800, संपादक (हिंदी): प्रणय प्रबोध पाठक, संपादक (खोरठा): दिनेश कुमार दिनमणि, अनाम अजनबी, संपादकीय सलाहकार : नवजीत शाहदेव, फोन : संपादक 9430397436, विज्ञापन : 9199255612, प्रसार विभाग : ओम प्रकाश कुमार, 9430397436 सुझाव या शिकायत ई मेल : khorthajharnews@gmail.com पर मेल करें।